डॉ० आरती कुमारी

किनारा हूँ मैं दरिया का तो तुम धारा की कलकल हो
जहाँ हमतुम मिलें हमदम वहीं क़िस्सा मुकम्मल हो

हमेशा मुस्कुराते गुनगुनाते ज़िन्दगी गुज़रे
न दिल में हो शिकन कोई न माथे पर कोई बल हो

सजी हो पाँव में पायल लगी हो हाथ में मेंहदी
मेरे सर पर तुम्हारी चाहतों का सुर्ख़ आँचल हो

सिला है मेरी उल्फ़त का तुम्हारे प्यार का पाना
मेरी सब प्रार्थनाओं का दुआओं का तुम्हीं फल हो

मैं हूँ इक बूंद पानी की वजूद इसका है तुमसे ही
कभी सागर के जैसे हो कभी भीगा सा बादल हो

सीख देता है यही इतिहास हम सब जानते हैं
क्यों रहे सदियों किसी के दास हम सब जानते हैं

ताज पाने के लिए क्या-क्या नहीं होता यहाँ पर
क्यों मिला था राम को वनवास हम सब जानते हैं

एक भक्तिन ने कई वर्षों तलक है राह देखी
सब्र का मीठा था वो अहसास हम सब जानते हैं

राम कोई अब न भागेगा हिरन के पीछे -पीछे
है छलावा रूप का विन्यास हम सब जानते हैं

युद्ध में कितने ही नरसंहार का कारण बना था
द्रौपदी का वह कुटिल परिहास हम सब जानते हैं

हर तरफ़ है शोर जारी, ख़ौफ़ तारी है
मन व्यथित है सांस भारी, ख़ौफ़ तारी है

वक़्त है हम चुप न बैठे हाथ बांधे यूँ
अब तो लें कुछ ज़िम्मेदारी, ख़ौफ़ तारी है

हर घड़ी है सबके मन में सोच यह हावी
कब यहाँ है किसकी बारी, ख़ौफ़ तारी है

ज़ात मज़हब नस्ल पैसा, कुछ नहीं देखे
इसके आगे सब भिखारी, ख़ौफ़ तारी है

खबरें मुर्दों से भरीं, चैनल से रिसता खूं
ख़ौफ़ में जनता है सारी, ख़ौफ़ तारी है

ये सियासत मौत पे भी जश्न है करती
कुछ कमी इसमें हमारी, ख़ौफ़ तारी है

मेरे सीने में दिल तुम्हारा है
हाय कितना हसीं नज़ारा है

ख़ौफ़ क्यों हो मुझे अंधेरों से
मेरी क़िस्मत का तू सितारा है

तुझ तलक बार बार आती हूँ
मैं लहर और तू किनारा है

तेरा मेरा नहीं है अब तो कुछ
पास जो भी है सब हमारा है

याद आई है रेत की मछली
तेरे बिन जब भी दिन गुज़ारा है

हिम्मतो हौसला है तुमसे ही
और चैनो सुकून सारा है

ISSN:2583-8849